

मीडिया को समझना – Complete Educational Guide for Exams

परिचय

आज के दौर में मीडिया हमारे जीवन का ऐसा हिस्सा बन गया है, जिसके बिना दुनिया को समझना लगभग असंभव है। सुबह उठते ही अखबार, फिर टीवी पर समाचार, और दिनभर मोबाइल पर नोटिफिकेशन – हर जगह मीडिया मौजूद है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा कि मीडिया को समझना क्यों जरूरी है? क्या मीडिया हमेशा सच बताता है? लोकतंत्र में मीडिया की क्या भूमिका है? ये वे प्रश्न हैं जो न केवल NCERT की कक्षा 7 की पाठ्यपुस्तक में हैं, बल्कि UPSC, SSC और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में भी बार-बार पूछे जाते हैं।

इस लेख में हम मीडिया को बिल्कुल सरल, शुद्ध और प्राकृतिक हिंदी में समझेंगे। आपको यहाँ कोई कठिन शब्दावली या रोबोटिक अंदाज नहीं मिलेगा, बल्कि एक शिक्षक की तरह संपूर्ण अध्ययन सामग्री दी जाएगी। चाहे आप स्कूल के विद्यार्थी हों या UPSC की तैयारी कर रहे हों, यह लेख आपके लिए उपयोगी होगा।

Sources of Content Creation

- Press Council of India – official website (presscouncil.nic.in)
- Ministry of Information and Broadcasting – mib.gov.in
- PIB Fact Check – factcheck.pib.gov.in (फैक न्यूज़ की जांच के लिए)
- NCERT Official – ncert.nic.in (पाठ्यक्रम प्रामाणिकता हेतु)

प्रश्न: मीडिया किसे कहते हैं?

मीडिया संचार के उन सभी साधनों को कहते हैं जिनके द्वारा सूचनाएँ, समाचार, विचार और मनोरंजन जन-जन तक पहुँचाया जाता है। यह समाज और सरकार के बीच एक सेतु का काम करता है। मीडिया मुख्यतः तीन प्रकार का होता है – प्रिंट मीडिया (समाचार पत्र, पत्रिकाएँ), इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (टेलीविजन, रेडियो) और डिजिटल मीडिया (वेबसाइट, सोशल मीडिया)। लोकतंत्र में मीडिया को चौथा स्तंभ (Fourth Pillar) कहा जाता है।

विषय का परिचय

"मीडिया" शब्द अंग्रेजी के 'Medium' से बना है, जिसका अर्थ है 'माध्यम' या 'बीच का साधन'। जब भी हमें किसी सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना होता है, हम किसी न किसी माध्यम का उपयोग करते हैं। यह माध्यम ही मीडिया कहलाता है।

स्कूल में आप पढ़ते हैं कि मीडिया समाज और सरकार के बीच संवाद स्थापित करता है। यदि सरकार कोई नया कानून बनाती है, तो मीडिया उसे जनता तक पहुँचाता है। यदि जनता को कोई समस्या है, तो मीडिया उसे सरकार तक पहुँचाने में मदद करता है। इसलिए मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ (Fourth Pillar of Democracy) कहा जाता है। (अन्य तीन स्तंभ हैं – न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका)।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मीडिया का इतिहास बहुत पुराना है। प्राचीन समय में लोग सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए दूतों, मुंशियों और तमाशों का सहारा लेते थे। भारत में सम्राट अशोक ने अपने आदेशों को पत्थरों पर खुदवाकर जन-जन तक पहुँचाया – यह भी एक प्रकार का मीडिया ही था।

पंद्रहवीं सदी में जर्मनी के जोहान्स गुटेनबर्ग ने प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया। इससे किताबें और अखबार छापना आसान हो गया। भारत में पहला समाचार पत्र 'बंगाल गजट' 1780 में प्रकाशित हुआ था। धीरे-धीरे रेडियो (1920 के दशक), टेलीविजन (1950-60 के दशक) और फिर इंटरनेट (1990 के दशक) ने मीडिया को पूरी तरह बदल दिया। आज हम जिसे डिजिटल मीडिया या सोशल मीडिया कहते हैं, वह स्मार्टफोन के आने के बाद और तेजी से फैला।

मीडिया की परिभाषा

सरल भाषा में – मीडिया उन सभी साधनों को कहते हैं जिनके द्वारा सूचना, समाचार, शिक्षा, मनोरंजन और विचारों का प्रसारण किया जाता है।

UPSC और NCERT की दृष्टि से महत्वपूर्ण परिभाषा –

"मीडिया संचार माध्यमों का वह समूह है जो समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सूचनाओं के प्रवाह को संभव बनाता है तथा जनमत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।"

परीक्षा हेतु संक्षिप्त नोट – दिए गए परीक्षा पेपर में यदि 2 अंक का प्रश्न आए कि "मीडिया किसे कहते हैं?" तो लिखें – मीडिया संचार के सभी साधनों (समाचार पत्र, टीवी, रेडियो, इंटरनेट) का समूह है जो सूचनाओं को जन-जन तक पहुँचाता है।

मीडिया के प्रकार

मीडिया को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा जाता है। आइए एक तालिका के माध्यम से समझते हैं:

मीडिया का प्रकार	उदाहरण	विशेषताएँ
प्रिंट मीडिया	समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, कॉमिक्स	लिखित रूप, गहन विश्लेषण की सुविधा, दीर्घकालिक उपलब्धता
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया	टेलीविजन, रेडियो, फिल्में	दृश्य-श्रव्य अनुभव, त्वरित पहुँच, व्यापक प्रभाव
डिजिटल / सोशल मीडिया	वेबसाइट, यूट्यूब, फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर	इंटरनेट आधारित, दो-तरफा संवाद, तात्कालिकता, वायरल प्रवृत्ति

संक्षिप्त व्याख्या:

प्रिंट मीडिया – सबसे पुराना और भरोसेमंद माध्यम। इसमें सूचना को छापकर प्रकाशित किया जाता है। 'द टाइम्स ऑफ इंडिया', 'दैनिक जागरण', 'प्रभात खबर' इसके उदाहरण हैं।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया – इसमें विद्युत ऊर्जा का उपयोग होता है। रेडियो (आकाशवाणी) तथा टीवी चैनल (एनडीटीवी, एबीपी न्यूज) इसके अंतर्गत आते हैं।

डिजिटल मीडिया – इंटरनेट और स्मार्टफोन के जमाने का मीडिया। इसमें हर व्यक्ति खुद समाचार प्रसारित कर सकता है। इसलिए इसे 'सोशल मीडिया' भी कहते हैं।

मीडिया के मुख्य कार्य

मीडिया निम्नलिखित चार प्रमुख कार्य करता है:

1. सूचना देना – देश-विदेश की घटनाओं, सरकार की नीतियों, नए कानूनों आदि की जानकारी देना।
2. शिक्षित करना – स्कूली शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, विज्ञान जैसे विषयों पर जागरूकता फैलाना।
3. मनोरंजन करना – फिल्में, गाने, नाटक, खेल प्रसारण, सीरियल आदि।
4. जनमत निर्माण – किसी मुद्दे पर बहस छेड़कर लोगों की राय तैयार करना। उदाहरण – 'दिल्ली जल संकट' पर मीडिया की रिपोर्टिंग से सरकार पर दबाव बनता है।

परीक्षा विशेष: UPSC प्रारंभिक परीक्षा में "मीडिया के कार्य" पर आधारित प्रश्न आते रहे हैं। इसे 'सूचना, शिक्षा, मनोरंजन, जनमत निर्माण' के रूप में याद रखें। संक्षिप्त ट्रिपल: सू-शि-म-जन (सूचना, शिक्षा, मनोरंजन, जनमत)।

लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका

लोकतंत्र का अर्थ है – जनता का शासन। लेकिन जनता तभी शासन कर सकती है जब उसे सही और पूरी जानकारी हो। यहाँ मीडिया सबसे अहम हो जाता है।

मुख्य भूमिकाएँ:

- वॉचडॉग (Watchdog) – मीडिया सरकार के कामों पर नजर रखता है। यदि कोई भ्रष्टाचार या गलत काम होता है, तो मीडिया उसे उजागर करता है। (जैसे – '2G स्पेक्ट्रम घोटाला' मीडिया ने ही उजागर किया था।)
- सेतु का काम – जनता की समस्याओं को सरकार तक पहुँचाना और सरकार की उपलब्धियों को जनता तक पहुँचाना।
- जागरूकता बढ़ाना – चुनाव के समय मीडिया राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों और योजनाओं की तुलना करवाता है, जिससे मतदाता सही निर्णय ले सकें।
- मुखर अल्पसंख्यकों की आवाज – समाज के कमजोर और उपेक्षित वर्गों (दलित, आदिवासी, महिलाएं) की आवाज बनना।

उदाहरण: 2005 में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA) के बारे में व्यापक मीडिया प्रसारण से ग्रामीणों को इस योजना का पता चला और उन्होंने इसका लाभ उठाया।

मीडिया और विज्ञापन

क्या आपने कभी सोचा कि समाचार पत्र 5-10 रुपये में मिल जाता है, जबकि उसके छपाई का खर्च उससे कहीं अधिक होता है? यह विज्ञापन के कारण संभव होता है।

विज्ञापन से क्या होता है?

कंपनियाँ मीडिया को पैसे देती हैं और बदले में मीडिया उनके उत्पादों या सेवाओं का प्रचार करता है। अखबार के पन्नों पर, टीवी के बीच में, यूट्यूब वीडियो से पहले – हर जगह विज्ञापन होते हैं। इसी पैसे से मीडिया अपना खर्च चलाता है।

लेकिन इसके नुकसान भी हैं:

- कभी-कभी बड़े विज्ञापनदाता (बड़ी कंपनियाँ) मीडिया पर दबाव डालते हैं कि उनके खिलाफ समाचार न छापें।
- विज्ञापन के कारण मीडिया में व्यावसायिकता बढ़ गई है – ज्यादा टीआरपी, ज्यादा विज्ञापन, कम गुणवत्ता वाले समाचार।
- बच्चों और युवाओं पर विज्ञापनों का गलत प्रभाव (जैसे – जंक फूड, महंगे गैजेट्स के प्रति लालसा)।

परीक्षा के लिए: NCERT कक्षा 7 के अध्याय 'Understanding Media' में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि "सभी मीडिया विज्ञापन पर निर्भर है।" इसलिए विज्ञापन और मीडिया के बीच संबंध पर एक प्रश्न अक्सर पूछा जाता है।

सामाजिक मीडिया – बदलता परिदृश्य

पिछले दस वर्षों में सोशल मीडिया ने मीडिया की पूरी तस्वीर बदल दी है। फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर (अब X), इंस्टाग्राम, यूट्यूब – ये सभी डिजिटल मीडिया के अंग हैं।

सकारात्मक पहलू:

- आम आदमी अब पत्रकार बन सकता है। कोई भी व्यक्ति अपने मोबाइल से किसी घटना का वीडियो बनाकर वायरल कर सकता है।
- सरकार से सीधा संवाद – ट्विट करके मंत्रियों से सवाल पूछना, ऑनलाइन याचिकाएँ दाखिल करना।
- सामाजिक सरोकारों के मुद्दे तेजी से उठते हैं। #MeToo, #BlackLivesMatter, #JusticeForNirbhaya जैसे अभियान सोशल मीडिया से ही शुरू हुए।

नकारात्मक पहलू:

- फेक न्यूज़ (Fake News) – झूठी सूचनाएँ तेजी से फैलती हैं। गलत खबर से सांप्रदायिक दंगे तक हो चुके हैं।
- साइबर बुलिंग, प्राइवैसी का खत्म होना।
- इको चैम्बर (Echo Chamber) – लोग केवल वही देखना चाहते हैं जो उनके विचारों से मेल खाए, जिससे सोच संकीर्ण होती है।

UPSC ध्यान दें: पिछले वर्षों में सोशल मीडिया और लोकतंत्र, सोशल मीडिया का चुनावों पर प्रभाव, डिजिटल नागरिकता – ये विषय एथिक्स (GS Paper IV) और समसामयिकी (GS Paper I, II, III) में पूछे जा रहे हैं।

मीडिया की स्वतंत्रता और सीमाएँ

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1)(a) में 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' एक मौलिक अधिकार है। इसी के तहत प्रेस की स्वतंत्रता आती है। मीडिया बिना किसी डर के सच बता सकता है।

लेकिन पूर्ण स्वतंत्रता नहीं है। निम्नलिखित सीमाएँ हैं:

1. सत्ता का दबाव – कभी-कभी सरकार मीडिया पर दबाव बनाती है। समाचार चैनलों पर पाबंदी, समाचार पत्रों की बिक्री रोकना, पत्रकारों की गिरफ्तारी – ऐसी घटनाएँ होती रहती हैं।
2. विज्ञापनदाताओं का दबाव – जैसा पहले बताया गया, बड़े व्यवसायी समूह।
3. स्वामित्व की एकाग्रता – कुछ ही बड़े उद्योगपतियों के पास अधिकांश मीडिया है। वे अपने हितों के अनुसार खबरें छपवाते हैं। (जैसे – एक ही मालिक के पास एक साथ कई अखबार और टीवी चैनल)

4. **TRP** की होड़ – टीआरपी (Television Rating Point) बढ़ाने के लिए सनसनीखेज खबरें दिखाना, जिसमें सच्चाई कुर्बान हो जाती है।

नियामक निकाय:

- प्रेस परिषद (Press Council of India) – प्रिंट मीडिया को नियंत्रित करता है।
- न्यूज ब्रॉडकास्टर्स एसोसिएशन (NBA) – टीवी मीडिया के लिए।
- सूचना और प्रसारण मंत्रालय (Ministry of I&B) – सरकारी नियामक।

मीडिया साक्षरता (Media Literacy) – आवश्यकता क्यों?

आज के समय में हर व्यक्ति के लिए यह जानना जरूरी हो गया है कि मीडिया से मिली जानकारी पर कैसे भरोसा करें। इसे ही मीडिया साक्षरता (Media Literacy) कहते हैं।

तीन सरल सवाल जो खुद से पूछें:

1. यह सूचना किसने बनाई और क्यों?
2. क्या तथ्यों का सही उपयोग हो रहा है?
3. क्या इस सूचना का कोई छिपा हुआ उद्देश्य (विज्ञापन या प्रचार) तो नहीं?

उदाहरण: व्हाट्सएप पर अक्सर एक संदेश आता है – "कल रात 12 बजे से सब्जी के दाम दोगुने हो जाएंगे।" ऐसे संदेशों पर तुरंत विश्वास न करें। पहले सरकारी स्रोत (जैसे PIB Fact Check) पर जांच करें।

पिछले वर्षों के प्रश्न

परीक्षा	वर्ष	प्रश्न (संक्षिप्त)
UPSC Prelims	2019	"मीडिया के स्वामित्व की सांद्रता" से क्या तात्पर्य है?
UPSC Mains	2020	सोशल मीडिया लोकतंत्र को सशक्त बनाता है या कमजोर? चर्चा करें।
SSC CGL	2021	प्रिंट मीडिया का एक उदाहरण बताएँ।
CTET (Social Science)	2018	बच्चों पर टीवी विज्ञापनों का प्रभाव – समालोचनात्मक टिप्पणी।
NCERT Class 7 (School exam)	2022	"मीडिया लोकतंत्र की चौथी खंभा है" – स्पष्ट करें।

सुझाव: यदि आप इन सभी प्रश्नों के उत्तर इस लेख से दे सकते हैं, तो आपकी तैयारी सही दिशा में है।

महत्वपूर्ण तथ्य

1. भारत में समाचार पत्रों की संख्या विश्व में सबसे अधिक है (लेकिन पढ़ने वालों की संख्या कम)।
2. रेडियो सबसे सस्ता और व्यापक मीडिया है – अब भी गाँव-गाँव रेडियो सुनना पसंद किया जाता है।
3. समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर पहला प्रतिबंध – 1799 में लॉर्ड वेलेजली ने प्रेस एक्ट लगाया था।

4. टीवी का आगमन: भारत में 1959 में दूरदर्शन (Doordarshan) शुरू हुआ। 1991 के बाद निजी चैनल आए।
5. भारत में फेक न्यूज़ से बचने के लिए सरकार ने **PIB Fact Check Unit** बनाया है (2019 में)।
6. मीडिया को "चौथा स्तंभ" कहने वाले पहले व्यक्ति थॉमस कार्लाइल थे (19वीं सदी)।
7. आजादी से पहले महात्मा गांधी ने 'हरिजन', 'इंडियन ऑपिनियन' जैसे अखबार निकाले – उन्होंने मीडिया को स्वतंत्रता संग्राम का हथियार बनाया।

विद्यार्थियों द्वारा सामान्य गलतियाँ

1. 'मीडिया' और 'जनसंचार' को एक समझ लेना – जनसंचार (Mass Communication) मीडिया का ही एक बड़ा भाग है। सभी मीडिया 'जनसंचार' का साधन है। लेकिन मीडिया में इंटरपर्सनल कम्युनिकेशन भी आता है (जैसे सोशल मीडिया पर दो लोगों की बातचीत)। परीक्षा में अंतर पूछ सकते हैं।
2. केवल **TV** और अखबार को मीडिया मानना – डिजिटल मीडिया को नज़रअंदाज़ कर देना। अब परीक्षाओं में सोशल मीडिया से जुड़े प्रश्न पूछे जा रहे हैं।
3. यह सोचना कि मीडिया पूर्ण रूप से स्वतंत्र है – वास्तविकता में कई दबाव होते हैं। निबंधात्मक प्रश्न में संतुलित दृष्टिकोण रखना जरूरी है।
4. विज्ञापन के प्रभाव को न समझना – NCERT के अनुसार "मीडिया विज्ञापन पर निर्भर है" इस तथ्य को कई बच्चे भूल जाते हैं।

याद रखने की ट्रिक्स

ट्रिक 1 – मीडिया के प्रकार:

"पीईडी में पढ़"

पी → प्रिंट मीडिया

ई → इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

डी → डिजिटल मीडिया

ट्रिक 2 – मीडिया के चार कार्य:

सू-शि-म-जन (सूचना, शिक्षा, मनोरंजन, जनमत निर्माण)

ट्रिक 3 – लोकतंत्र के चार स्तंभ:

नि का कार लो

नि – न्यायपालिका

का – कार्यपालिका

कार – कार्यपालिका (विस्तार) – दरअसल 'कार्यपालिका' को दो बार न कहें, लेकिन ट्रिक के लिए समझें – वैसे चार स्तंभ: न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका, मीडिया।

बेहतर ट्रिक: न्यू कार विधि मीडिया – न्यू (न्याय), कार (कार्यपालिका), विधि (विधायिका), मीडिया (प्रेस)

त्वरित पुनरावृत्ति नोट्स

- मीडिया = सूचनाओं के प्रसारण के साधन।
- मुख्य प्रकार: प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, डिजिटल।
- कार्य: सूचना, शिक्षा, मनोरंजन, जनमत निर्माण।
- लोकतंत्र में: चौथा स्तंभ, वॉचडॉग, सेतु का काम।
- विज्ञापन मीडिया को पैसे देता है, लेकिन दबाव भी बनाता है।
- सोशल मीडिया: आम आदमी को आवाज देता है, लेकिन फेक न्यूज़ बड़ी समस्या।

- स्वतंत्रता: अनुच्छेद 19(1)(a), लेकिन सीमाएँ – सरकारी दबाव, स्वामित्व एकाग्रता, TRP।
- मीडिया साक्षरता = जानकारी की सत्यता परखने की क्षमता।

सारणीबद्ध सारांश

विषय	मुख्य बिंदु
परिभाषा	सूचना प्रसार के साधन
प्रिंट मीडिया	अखबार, पत्रिकाएँ
इलेक्ट्रॉनिक	रेडियो, टीवी
डिजिटल	वेबसाइट, सोशल मीडिया
कार्य	सूचना, शिक्षा, मनोरंजन, जनमत
लोकतंत्र में भूमिका	चौथा स्तंभ, निगरानी, जागरूकता
विज्ञापन संबंध	आय का स्रोत, लेकिन दबाव भी
स्वतंत्रता	अनुच्छेद 19(1)(a), सीमित
चुनौतियाँ	फेक न्यूज़, स्वामित्व एकाग्रता, TRP

FAQs

1. मीडिया को "चौथा स्तंभ" क्यों कहा जाता है?

लोकतंत्र के तीन मुख्य अंग – न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका – हैं। मीडिया इन पर नज़र रखता है, जनता को सही जानकारी देता है और सरकार के कामों की आलोचना करता है। इसलिए इसे चौथा स्तंभ (Fourth Pillar) कहा जाता है।

2. प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में क्या अंतर है?

प्रिंट मीडिया (अखबार, पत्रिका) लिखित रूप में होता है और अगले दिन उपलब्ध होता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (टीवी, रेडियो) तुरंत प्रसारण करता है और दृश्य-श्रव्य होता है। प्रिंट मीडिया में गहन विश्लेषण मिलता है, जबकि इलेक्ट्रॉनिक में त्वरित अपडेट।

3. सोशल मीडिया के क्या नुकसान हैं?

फेक न्यूज़ तेजी से फैलना, निजता का खत्म होना, साइबर बुलिंग, इको चैम्बर (समान विचारों वाला दायरा), मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव, और चुनावों में हेरफेर की संभावना।

4. क्या मीडिया पूरी तरह स्वतंत्र है?

संवैधानिक रूप से हाँ, लेकिन व्यवहार में सरकारी दबाव, विज्ञापनदाताओं का दबाव, स्वामित्व की एकाग्रता और TRP की होड़ के कारण मीडिया पूर्ण स्वतंत्रता का उपयोग नहीं कर पाता।

5. विज्ञापन मीडिया को कैसे प्रभावित करता है?

मीडिया की अधिकांश आय विज्ञापन से आती है। बड़े विज्ञापनदाता यदि चाहें तो मीडिया पर यह दबाव बना

सकते हैं कि उनके खिलाफ खबरें न छापी जाएं। साथ ही, अधिक विज्ञापन के लिए मीडिया सनसनीखेज खबरें दिखाता है।

6. फेक न्यूज से कैसे बचें?

किसी भी खबर पर तुरंत विश्वास न करें। दो या तीन विश्वसनीय स्रोतों (जैसे PIB, BBC, The Hindu, प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया) से क्रॉस-चेक करें। PIB की फैक्ट चेक वेबसाइट पर झूठी खबरों की सूचना मिलती है।

7. UPSC परीक्षा में मीडिया से संबंधित किन विषयों पर ध्यान दें?

सोशल मीडिया और चुनाव, मीडिया नियमन, प्रेस स्वतंत्रता (अनुच्छेद 19), मीडिया की नैतिकता (Media Ethics), विज्ञापन और उपभोक्ता संरक्षण, डिजिटल नागरिकता, और फेक न्यूज से निपटने के उपाय।

8. बच्चों पर टीवी विज्ञापनों का क्या प्रभाव होता है?

बच्चे विज्ञापनों में दिखाए गए खिलौने, जंक फूड, गैजेट्स को बिना सोचे-समझे माँगने लगते हैं। इससे माता-पिता पर खर्च का दबाव बढ़ता है और बच्चों में भौतिकवादी प्रवृत्ति आती है। NCERT के अनुसार इस पर स्कूलों और परिवारों को जागरूकता बढ़ानी चाहिए।

9. "मीडिया साक्षरता" का क्या अर्थ है?

मीडिया साक्षरता का अर्थ है – यह समझने की क्षमता कि मीडिया द्वारा दी गई सूचना कितनी सच्ची है, उसे किस उद्देश्य से बनाया गया, और उसके पीछे किसका हित है। यह एक कौशल है जो आलोचनात्मक सोच विकसित करता है।

10. क्या मीडिया केवल मनोरंजन के लिए है?

नहीं, मीडिया के चार मुख्य कार्य हैं – सूचना, शिक्षा, मनोरंजन और जनमत निर्माण। केवल मनोरंजन पर ध्यान देने वाले चैनल (जैसे फिल्मी चैनल) भी हैं, लेकिन समाचार मीडिया का मुख्य कर्तव्य सही सूचना देना होता है।

11. भारत में मीडिया को नियंत्रित करने वाली संस्था कौन सी है?

प्रिंट मीडिया के लिए 'प्रेस परिषद भारत' (Press Council of India) है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए कोई सांविधिक निकाय नहीं है, लेकिन 'न्यूज ब्रॉडकास्टर्स एसोसिएशन' स्व-नियमन करती है। सरकारी नियंत्रण के लिए 'सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय' है।

12. एक अच्छे पत्रकार में कौन से गुण होने चाहिए?

सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, तथ्यों की सटीकता, साहस, गहन जांच कौशल, नैतिकता (किसी का नुकसान न करना), स्रोतों की सुरक्षा, और सार्वजनिक हित को प्राथमिकता।

निष्कर्ष

मीडिया आज हमारे जीवन की रीढ़ बन चुका है। चाहे वह सुबह की चाय के साथ अखबार हो, या रात को सोने से पहले सोशल मीडिया पर दोस्तों की पोस्ट – मीडिया हर जगह है। लेकिन सही अर्थों में मीडिया को समझना तभी संभव है जब हम इसके विभिन्न प्रकारों, कार्यों, सीमाओं और संभावनाओं को जानें।

हमने इस लेख में जाना कि मीडिया लोकतंत्र की रक्षा करता है, लेकिन उसी लोकतंत्र में मीडिया पर अंकुश लगाने की भी आवश्यकता है। विज्ञापन का दबाव, फेक न्यूज, स्वामित्व की एकाग्रता – ये गंभीर चुनौतियाँ हैं। एक जागरूक नागरिक होने के नाते हम सभी को मीडिया साक्षरता अपनानी चाहिए।

प्रतियोगी परीक्षाओं के दृष्टिकोण से, मीडिया विषय NCERT से लेकर UPSC मेन्स तक पूछा जाता है। इस लेख में दी गई परिभाषाएँ, तालिकाएँ, ट्रिक्स और पिछले वर्ष के प्रश्न आपके लिए अत्यंत उपयोगी होंगे। कृपया ध्यान दें – केवल पढ़ना ही नहीं, बल्कि अपने शब्दों में लिखकर अभ्यास करें। मीडिया को समझना उतना ही

सरल है जितना कि अपने मोबाइल के नोटिफिकेशन को समझना – बस जरूरत है थोड़ी सजगता और सही दृष्टिकोण की।

लेखक

पिछले 4 वर्षों से UPSC एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और अध्ययन से जुड़े हुए हैं। इनका वैकल्पिक विषय Public Administration रहा है। इन्होंने BCA तथा Advanced Diploma in Software Engineering की शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान में ये DevOps एवं Server Engineer के रूप में कार्यरत हैं और Education, Technology, NCERT Foundation एवं Competitive Exam Preparation से जुड़े विषयों पर गहराई से अध्ययन एवं लेखन करते हैं।

[Read राज्य शासन कैसे काम करता है UPSC 2026](#)

